राष्ट्रीय
सहारा

कानपुर • शुक्रवार • 1 मार्च • 2024

देश में मसाला फसलों का क्षेत्रफल व उत्पादन बढ़ा

पुर। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के सब्जी अनुभाग में गुरुवार को एक दिवसीय ला मूल्य संवर्धन एवं उत्पादन' विषय पर कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस क्रम में विभागाध्यक्ष डॉ. राम वटुक सिंह ने वताया कि उत्तर प्रदेश में लगातार मसाला तों के उत्पादन और क्षेत्रफल में वृद्धि हो रही है। उन्होंने किसानों को विश्वविद्यालय द्वारा सित नवीन प्रजातियों व कृषि तकनीकों के वारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम में रुण कुमार सिंह ने किसानों से अपील की कि वे वैज्ञानिकों द्वारा वताई गई कृषि तकनीकों वश्य अपनाएं। जिससे वे स्वावलंवी हो कर आत्मनिर्भर वनें। कृषि विज्ञान केंद्र के नेक डॉ. शशिकांत ने विस्तार से कृषि विज्ञान केंद्र की उपलब्धियों की जानकारी दी। ग के डॉ. संजीव कुमार सचान ने लहसुन व प्याज की खेती की वैज्ञानिक विधाएं वताई। ने किसानों से अपील की है कि वे अधिक से अधिक क्षेत्रफल में प्याज व लहसुन की करें। श्री सिंह ने मसालों के साथ सहफसली खेती की तकनीकों पर प्रकाश डाला और कि सह फसली खेती से किसानों को अधिक मुनाफा होगा। डॉ.प्रांजल सिंह ने भी किसानों ानकारी दी। इस अवसर पर प्रगतिशील कृषक छुन्ना सिंह, चरण सिंह, राजू राजपूत, क कुमार सहित लगभग एक सैकड़ा कृषक उपस्थित रहे।

सीएसए के 131 साल

हरित क्रांति के दौरान सीएसए में विकसित की गई थीं गेहूं की दो प्रमुख प्रजातियां

सीएसए के डायरेक्टर रिसर्च प्रो. पीके सिंह ने बताया कि हरित क्रांति के दौरान ही कानपुर में सीएसए विवि ने गेहूं की दो प्रमुख प्रजातियां विकसित कीं। पहली वर्ष 1965 में के-65 और दूसरी वर्ष 1968 में के-68 विकसित की गई।

सीएसए का 131वां स्थापना दिवस आज

घर-घर गेहूं की चपाती पहुंचाई खाद्यान्न की 301 प्रजातियां दीं

गेहूं की 42, जौ की 32, तिलहन की 91, शाकभाजी की 59 प्रजातियां की जा चुकी हैं विकसित

शैली भल्ला

कानपुर। देशवासियों की थाली में गेहूं की रोटी, मल्का-मसूर दाल, राई-सरसों हो या मटर की मिठास परोसने का श्रेय अपने चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि (सीएसए) को भी जाता है। पत्थर कॉलेज के नाम से मशहूर सीएसए ने देशवासियों को अब तक 301 खाद्यान्न प्रजातियों का तोहफा दिया है। यहां के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित प्रजातियों ने पूरे देश में खाद्य प्रणाली के स्वरूप को बदला है। गेहूं की चपाती के लिए प्रचलित के-68 प्रजाति इसी संस्थान में विकसित की गई है। विवि के डायरेक्टर रिसर्च प्रो. पीके सिंह ने बताया कि पहली बार गेहूं की चपाती बनाने वाली प्रजाति को सीएसए में विकसित किया गया था।

अपने 131 साल के सफर में सीएसए ने न केवल शोध के क्षेत्र में नाम कमाया है, बल्कि तकनीक रूप से भी मजबूत हुआ है। सीएसए की स्थापना से पहले देश में खाद्य संकट रहा। ज्यादातर आबादी केवल मोटे अनाज पर निर्भर थी। बहुत ही कम लोगों को गेहूं नसीब हो पाता था। देश में पहली बार 1904 में सीएसए में इकोनॉमी बॉटनिस्ट की पोस्ट पर नियुक्ति की गई और रबी की फसल पर काम शुरू हुआ। 1906 में पौधों की सुरक्षा पर काम शुरू किया गया। 1906 में कॉटन में गुलाबी रंग के कीड़े लगने पर शोध किया गया।

सीएसए में कुल 301 प्रजातियां विकसित हुई हैं। इनमें गेहूं की 42, जौ की 32, तिलहन की 91, शाकभाजी की 59 प्रजातियां विकसित की जा चुकी हैं। गेहूं की के-68 के अलावा हलना प्रजाति को भी विकसित किया गया है। इस प्रजाति को दो फसलों के बीच के समय में भी इसे बो सकते हैं। मटर की आजाद पी-3 प्रजाति विकसित की गई है। राई-सरसों की वरुना, जौ की ज्योति, मूंग की टाइप-44, उड़द की टाइप-9 और मसूर की मल्लिका प्रजातियां काफी प्रचलित हैं।

हरित क्रांति का गवाह बना विवि

सीएसए हरित क्रांति का गवाह भी रहा है। 1960 में जब हरित क्रांति हुई, तब मैक्सिको से गेहूं के 200 क्विंटल बीज परीक्षण के लिए सीएसए परिसर में भी आए थे। इनका रोपण कल्याण और सोना गांव में हुआ था। इसके बाद ही इसका नाम कल्याण सोना पड़ा। यह प्रजाति हरित क्रांति के जनक प्रो. स्वामीनाथन की देखरेख में विकसित की गई थी। प्रो. स्वामीनाथन सीएसए के छात्र थे। उन्हें दो मई 1982 को विवि के पहले दीक्षांत में डीलिट की उपाधि से सम्मानित किया गया था। विवि के डायरेक्टर रिसर्च प्रो. पीके सिंह ने बताया कि हरित क्रांति के दौरान ही कानपुर में सीएसए विवि ने गेहूं की दो प्रमुख प्रजातियां विकसित कीं। पहली वर्ष 1965 में के-65 और दूसरी वर्ष 1968 में के-68 विकसित की गई।

हरित क्रांति के दौरान मैक्सिको से आए थे गेहूं के बीज।

सीएसए के पहले कुलपति प्रो. केएन कौल (बाएं)।

1906 में देश के पहले एग्रीकल्चर कॉलेज के रूप में स्थापित हुआ

कानूनगो की ट्रेनिंग के लिए स्थापित हुआ यह एग्रीकल्चर स्कूल 1906 में अपने स्वतंत्र रूप में आ चुका था। तभी पहले एग्रीकल्चर कॉलेज की स्थापना हुई थी। 1912 में विशेष पत्थर से इसके मुख्य भवन का निर्माण लाला वजीर सहाय ने कराया। पत्थर से बना होने के कारण यह पत्थर कॉलेज के नाम से भी मशहूर हुआ। 1913 में कानूनगो और एग्रीकल्चर को अलग-अलग कर दिया गया। 1913 से डिप्लोमा इन कानूनगो और लाइसेंसिएट इन एग्रीकल्चर की उपाधि दी जाने लगी। 1921 में चार वर्षीय बीएससी कृषि का पहला बैच शुरू हुआ। 1944 में सात विषयों के साथ परास्नातक की पढ़ाई शुरू हुई। 1969 में यूपी इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर साइंस की स्थापना हुई। उस दौरान यह कानपुर यूनिवर्सिटी से संबद्ध रहा। 1975 में यह चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि के रूप में स्थापित हुआ।

Cawnpore Agricultural College.

LICENTIATE IN AGRICULTURE.

This is to certify that

एग्रीकल्चर स्कूल में दिए जाते थे ऐसे सर्टिफिकेट।

1921 में चार वर्षीय बीएससी कृषि का पहला बैच शुरू हुआ

1944 सात विषयों के साथ परास्नातक की पढ़ाई शुरू हुई

1969 यूपी इंस्टीट्यूट ऑफ एग्रीकल्चर साइंस की स्थापना

1975 में विश्वविद्यालय के रूप में हो सका स्थापित

ऐसा था एग्रीकल्चर स्कूल

1893 आज जिस चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (सीएसए) में छात्रों को खेती-किसानी के गुर सिखाए जा रहे हैं, 1893 में वहां अंग्रेजों ने कानूनगो की ट्रेनिंग के लिए एग्रीकल्चर स्कूल की स्थापना की थी। तब 25 सीटों के साथ देश का पहला कृषि स्कूल स्थापित हुआ था।

किसानों को समृद्ध करने का कर रहे प्रयास

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि का गौरवशाली इतिहास रहा है। इस गौरवशाली अतीत को आगे बढ़ाने के लिए नित नए प्रयास किए जा रहे हैं। नई शिक्षा नीति, एआई आधारित कृषि तकनीक, प्राकृतिक खेती, मूल्य संवर्धन और खाद्य प्रसंस्करण, कृषि आधारित स्टार्टअप को प्रोत्साहित करने पर कार्य किए जा रहे हैं। किसानों को समृद्ध करने और नई तकनीक के आधार पर खेती के गुर सिखाने के प्रयास किए जा रहे हैं। -वीसी, प्रो. आनंद कुमार सिंह

ये रहे हैं प्रमुख एलुमनी

- पद्मभूषण डॉ. आरबी सिंह- पूर्व कुलाधिपति केंद्रीय कृषि विवि इंफाल
- डॉ. कीर्ति सिंह- कृषि वैज्ञानिक भर्ती बोर्ड के पूर्व चेयरमैन, कई संस्थानों के भी कुलपति
- पद्मश्री डॉ. वीएल चोपड़ा- डायरेक्टर जनरल इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च
- पद्मश्री डॉ. जेपीएस यादव- कृषि वैज्ञानिक भर्ती मंडल के पूर्व चेयरमैन
- डॉ. ओपी गौतम- डायरेक्टर जनरल इंडियन काउंसिल ऑफ एग्रीकल्चर रिसर्च
- डॉ. एमएल मदान- डीडीजी पशु चिकित्सा, पूर्व कुलपति पशुचिकित्सालय मथुरा
- डॉ. एनजीपी राव- कृषि वैज्ञानिक, भर्ती मंडल के पूर्व चेयरमैन
- डॉ. संजय राजाराम- वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि के क्षेत्र में दिए जाने वाला सर्वोच्च वर्ल्ड फूड प्राइज 2014 में मिला
- डॉ. एसबी सिंह- यहां के पूर्व छात्र रहे और फिर कुलपति हो गए

पहले बैच का दीक्षांत समारोह

पहले बैच के दीक्षांत समारोह में उपस्थित तत्कालीन कुलपति, प्रोफेसर और छात्र।

वर्तमान स्थिति

एक कमरे के साथ शुरू विवि से वर्तमान में नौ कृषि कॉलेज संबद्ध हैं। कानपुर के कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, कॉलेज ऑफ फॉरेस्ट्री, कॉलेज ऑफ हार्टीकल्चर, कॉलेज ऑफ होमसाइंस, इटावा का कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, कॉलेज ऑफ डेयरी टेक्नोलॉजी, कॉलेज ऑफ फिशरी साइंस एंड रिसर्च, लखीमपुर का कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर, हरदोई का कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर इससे संबद्ध है। बीएससी, एमएससी और पीएचडी के कुल 1132 सीटों पर यूपी कैटेट के माध्यम से प्रवेश होता है।

निदेशक प्रसार डॉ.आर. के. यादव ने किया औचक निरीक्षण

जन एक्सप्रेस । कानपुर नगर

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर का गुरुवार को निदेशक प्रसार डॉ.आर. के. यादव ने औचक निरीक्षण किया। उन्होंने विभिन्न प्रदर्शन इकाइयों, जैसे किन्नो बगीचा, अमरूद का मातृ वृक्ष इकाई, अमरूद की सघन बागवानी, क्रॉप कैफेटेरिया, गृह वाटिका, वर्मी कंपोस्ट इकाई, मधुमक्खी पालन इकाई, ऐटिक, मछली यूनिट व मृदा परीक्षण प्रयोगशाला का निरीक्षण कर प्रसन्नता जाहिर की। उन्होंने केंद्र के प्रक्षेत्र पर लगी सरसो की फसल देखकर अगली फसल के लिए आवश्यक कार्यवाही करने के लिए निर्देशित किया । डॉ.यादव ने कृषि विज्ञान केंद्र पर स्थिति पॉलीहाउस का निरीक्षण कर उसको अधिक क्रियाशील बनाए रखने के लिए संबंधित वैज्ञानिक एवं प्रभारी को निर्देशित किया। निदेशक प्रसार ने केंद्र की बिल्डिंग की साफ सफाई जांचने के साथ ही केंद्र के पुस्तकालय का संकलन देखने के साथ ही सभी वैज्ञानिकों से उनकी पुस्तकों को केंद्र कि लाइब्रेरी मे दान करने का भी सुझाव दिया। जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग उनका लाभ ले सकें। निरीक्षण के दौरान निदेशक प्रसार ने सभी कृषि वैज्ञानिकों की प्रगति जांचते हुए, सभी स्टाफ को गुणवत्ता परख कार्य करने के लिए प्रेरित किया।

दैनिक जागरण आई नेक्स्ट 01/03/2024

केवीके दलीप नगर का किया औचक निरीक्षण

● डायरेक्टर एक्सटेंशन डॉ. आरके यादव ने किया निरीक्षण.

KANPUR (29 Feb): चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) दलीप नगर का थर्सडे को डायरेक्टर एक्सटेंशन डॉ आरके यादव ने औचक निरीक्षण किया. केवीके की विभिन्न यूनिट्स जैसे किन्नो बगीचा, अमरूद का मातृ वृक्ष इकाई, अमरूद की सघन बागवानी, क्रॉप कैफ़ेटेरिया, गृह वाटिका, वर्मी कंपोस्ट इकाई, मधुमक्खी पालन इकाई, ऐटिक, मछली यूनिट व मृदा परीक्षण प्रयोगशाला का निरीक्षण कर प्रसन्नता जाहिर की. पॉलीहाउस को अधिक क्रियाशील बनाए रखने के लिए भी निर्देशित किया.

सूर्यास्त 05.12
न्यूनतम 15.0°
62,710
78,500

कानपुर व लखनऊ से एक साथ प्रकाशित | वर्ष : 15 अंक : 239 | कानपुर, शुक्रवार 01 मार्च 2024 | नगर संस्करण | पृष्ठ 12 | मूल्य : 2.00 रुपए

राष्ट्रीय स्वरूप

निदेशक प्रसार ने कृषि वैज्ञानिकों को दिए आवश्यक दिशा निर्देश

कानपुर । सीएसए के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर का निदेशक प्रसार डॉ आर. के. यादव ने औचक निरीक्षण कर विभिन्न प्रदर्शन इकाइयों जैसे किन्नो बगीचा अमरूद का मातृ वृक्ष इकाई, अमरूद की सघन बागवानी, क्रॉप कैफेटेरिया, गृह वाटिका, वर्मी कंपोस्ट इकाई, मधुमक्खी पालन इकाई, ऐटिक, मछली यूनिट व मृदा परीक्षण प्रयोगशाला का निरीक्षण कर प्रसन्नता

जाहिर [illegible] प्रक्षेत्र पर लगी सरसो की फसल देख खुश होते हुए अगली फसल के लिए आवश्यक कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया। डॉ यादव ने कृषि विज्ञान केंद्र पर स्थिति पॉलीहाउस का निरीक्षण कर उसको अधिक क्रियाशील बनाए रखने हेतु संबंधित वैज्ञानिक एवं प्रभारी को निर्देशित भी किया। निदेशक प्रसार ने केंद्र की बिल्डिंग की साफ सफाई जांचने के साथ ही केंद्र के पुस्तकालय को देखा और कहा कि पुस्तकों का काफी अच्छा संकलन है।साथ ही सभी वैज्ञानिकों से उनकी पुस्तकों को केंद्र कि लाइब्रेरी मे दान करने का भी सुझाव दिया। जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग उनका लाभ ले सकें। निदेशक प्रसार ने सभी कृषि वैज्ञानिकों की प्रगति जांचते हुए, समस्त स्टाफ को गुणवत्ता परख कार्य करने हेतु प्रेरित किया साथ ही समय की आवश्यकतानुसार कार्य करने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिये।

Sign in to edit and save changes to this file.

अमर भारती

मसाला फसलों के उत्पादन के लिए कृषकों को दिया गया प्रशिक्षण

कानपुर (अमर भारती)। सीएसए के सब्जी अनुभाग द्वारा मसाला योजना अंतर्गत ग्राम औरंगाबाद में बृहस्पतिवार को एक दिवसीय मसाला मूल्य संवर्धन एवं उत्पादन विषय पर कृषक प्रशिक्षण का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष डॉ राम बटुक सिंह ने बताया कि उत्तर प्रदेश में लगातार मसाला फसलों के उत्पादन और क्षेत्रफल में वृद्धि हो रही है।तथा उन्होंने किसानों को विश्वविद्यालय द्वारा विकसित नवीन प्रजातियों एवं कृषि तकनीकों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। कार्यक्रम में डा. अरुण कुमार सिंह ने किसानों से अपील की कि वे वैज्ञानिकों द्वारा बताई गई कृषि तकनीकों को अवश्य अपनाएं। जिससे वे स्वालंबी हो कर आत्म निर्भर बने। कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक डा.शशिकांत ने विस्तार से कृषि विज्ञान केंद्र की उपलब्धियों की जानकारी दी। विभाग के डा. संजीव कुमार सचान ने लहसुन एवं प्याज की खेती की वैज्ञानिक विधाएं बताई।उन्होंने किसानों से अपील की है कि वे अधिक से अधिक क्षेत्रफल में प्याज एवं लहसुन की खेती करें। डॉ सिंह ने मसालों के साथ सहफसली खेती की तकनीकों पर प्रकाश डाला और कहा कि सह फसली खेती से किसानों को अधिक मुनाफा होगा।

कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर का निदेशक प्रसार ने किया निरीक्षण

दैनिक कानपुर उजाला

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर का आज निदेशक प्रसार डॉ आर. के. यादव ने औचक निरीक्षण कर विभिन्न प्रदर्शन इकाइयों, जैसे किन्नो बगीचा, अमरूद का मातृ वृक्ष इकाई, अमरूद की सघन बागवानी, क्रॉप कैफेटेरिया, गृह वाटिका, वर्मी कंपोस्ट इकाई, मधुमक्खी पालन इकाई, ऐटिक, मछली यूनिट व मृदा परीक्षण प्रयोगशाला का निरीक्षण कर प्रसन्नता जाहिर की। केंद्र के प्रक्षेत्र

पर लगी सरसो की फसल देख खुश होते हुए अगली फसल के लिए आवश्यक कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया। डॉ यादव ने कृषि विज्ञान केंद्र पर स्थिति पॉलीहाउस का निरीक्षण कर उसको अधिक क्रि याशील बनाए रखने हेतु संबंधित वैज्ञानिक एवं प्रभारी को निर्देशित भी किया। निदेशक प्रसार ने केंद्र की बिल्डिंग की साफ सफाई जांचने के साथ ही केंद्र के पुस्तकालय को देखा और कहा कि पुस्तकों का काफी अच्छा संकलन है।साथ ही सभी वैज्ञानिकों से उनकी पुस्तकों को केंद्र कि लाइब्रेरी मे दान करने का भी सुझाव दिया। जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग उनका लाभ ले सकें। निदेशक प्रसार ने सभी कृषि वैज्ञानिकों की प्रगति जांचते हुए, समस्त स्टाफ को गुणवत्ता परख कार्य करने हेतु प्रेरित किया साथ ही समय की आवश्यकतानुसार कार्य करने हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिये।

अभिषेक ... प्रतिनिधिमंडल में

हिंदुस्तान 01/03/2024

... शुक्ला रहे।

प्रसार निदेशक ने किया केवीके का निरीक्षण

कानपुर। सीएसए के प्रसार निदेशक डॉ. आरके यादव ने गुरुवार को कृषि विज्ञान केंद्र दिलीप नगर का औचक निरीक्षण किया। उन्होंने किन्नू का बगीचा, अमरूद का मातृ वृक्ष इकाई, अमरूद की सघन बागवानी, क्रॉप कैफेटेरिया, गृह वाटिका, वर्मी कंपोस्ट इकाई, मधुमक्खी पालन इकाई, ऐटिक, मछली यूनिट व मृदा परीक्षण प्रयोगशाला का भी निरीक्षण किया। पॉलीहाउस का निरीक्षण कर उसको अधिक क्रियाशील बनाए रखने का निर्देश दिया।